RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2024-2026

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 9 अंक : 02 | लखनऊ, बुधवार, 6 अगस्त 2025 से 5 सितम्बर 2025 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

4th EDITION

INDIA photo video EXPO

UTTAR PRADESH

DON'T MISS

A Complete Exhibition PHOTO, VIDEO, DIGITAL IMAGING, FRAME & ALBUM Industry

ORGANISERS BUY SELL interactions

CELEBRATING 25th YEAR

MEDIA PARTNER

स्टूडियो न्यूज

SUPPORTED BY

PAUP PHOTOGRAPHERS ASSOCIATION UTTAR PRADESH

Fri 19 Sat 20 Sun 21 SEPTEMBER 2025

INDIRA GANDHI PRATISHTHAN

Vibhuti Khand Near High Court Building, Gomti Nagar

LUCKNOW, UTTAR PRADESH

For Details Contact : +91 73090 18387 / 98397 45698

CONCURRENT SHOW

DPS EXPO

DIGITAL PRINT & SIGN

NEW DELHI

FORTHCOMING EVENTS

INDIA PHOTO EXPO 2026 NEW DELHI

INDIA FRAME & GIFT EXPO

PICTURE FRAME GIFTING SOLUTIONS

20, 21 & 22 MARCH 2026

Pragati Maidan, NEW DELHI

For Stall Booking Contact : BUYSELL INTERACTIONS PRIVATE LIMITED

70924 89181 / 63694 52532 / 70137 56679 / 93457 1334 info@buysellint.biz, www.buysellint.com

कभी-कभी सरल चित्र प्राप्त करना सबसे कठिन होता है - नील लेफर

Canon
Delighting You Always

सिनेमा-ग्रेड कैमरा
केवल क्रिएटर्स के लिए

Canon EOS R50V सिर्फ एक कैमरा नहीं है – ये एक पावरफुल टूल है, खास तौर पर क्रिएटर्स के लिए बनाया गया है। यह कंटेंट बनाने वालों, कहानी सुनाने वालों और विज़ुअल आर्टिस्ट्स के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका कॉम्पैक्ट साइज होने के बावजूद ये प्रोफेशनल क्वालिटी की वीडियो देता है। चाहे आप चलते-फिरते शूट कर रहे हों या कोई पूरा प्रोडक्शन सेटअप बना रहे हों, R50V आपको सिनेमा जैसा कंट्रोल और क्रिएटिव फ्रीडम देता है।

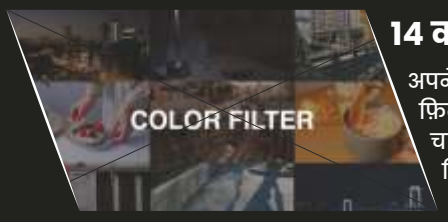

14 कलर फ़िल्टर्स
अपने स्टाइल को दिखाइए 14 इनबिल्ट क्रिएटिव फ़िल्टर्स के साथ। चाहे आपको गहरे और भावुक रंग चाहिए या चमकदार और जिंदादिल शेड्स, इन फ़िल्टर्स से आप बिना किसी LUTS या प्रीसेट के तुरंत अपना विज़ुअल टोन सेट कर सकते हैं।

स्लो-मो और फास्ट-मो
अब अपनी कहानी की रफ्तार आप तय कीजिए – इनबिल्ट स्लो मोशन और फास्ट मोशन कंट्रोल्स के साथ। इमोशंस को उभारना हो या एनर्जी भरनी हो – फ्रेम दर फ्रेम टेम्पो बदलना अब आसान है।

स्मूद मूवी-AF
अब फोकस वहीं रहेगा जहाँ ज़रूरी है। स्मूद मूवी ऑटोफोकस आपके सब्जेक्ट को क्लियर और शार्प बनाए रखता है, चाहे मूवमेंट हो रहा हो, फिर भी हर फ्रेम एकदम स्थिर और साफ़ दिखेगा।

कैनन लॉग 3
पोस्ट-प्रोडक्शन में पाएं ज़्यादा क्रिएटिव आज़ादी। Canon Log 3 के साथ आपको वाइड डायनामिक रेंज, बेहतरीन हाईलाइट डिटेल और प्रोफेशनल कलर ग्रेडिंग की सुविधा।

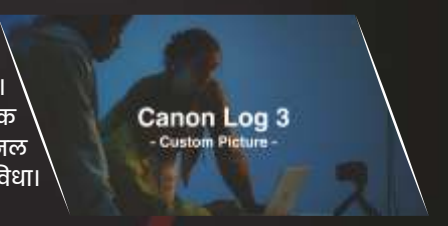

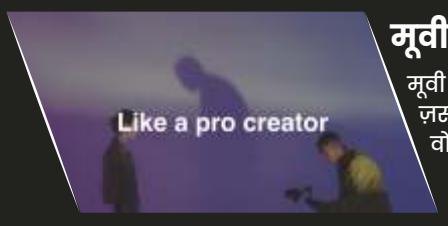

मूवी मोड डायल
मूवी मोड डायल से क्रिएटर्स को शूटिंग स्टाइल और ज़रूरी सेटिंग्स तक सीधा एक्सेस मिलता है, जिससे वो हर पल को तुरंत कैप्चर कर सकें।

रिच टोन 4:2:2 10-बिट
हर रंग को गहराई, सूक्ष्मता और परफेक्शन के साथ कैप्चर करें। EOS R50V 4:2:2 10-बिट में रिकॉर्ड कर सकता है, जिससे ग्रेडिएंट स्मूद होते हैं, एडिटिंग साफ होती है और हर वीडियो आपके विज़न को खूबसूरती से दर्शाता है।

मल्टी-कैम लाइव स्ट्रीमिंग
अपने सेटअप को एक लाइव स्टूडियो में बदल दीजिए। मल्टी-कैम लाइव स्ट्रीमिंग की मदद से आप आसानी से कैमरा एंगल और डिवाइस स्विच कर सकते हैं — और रियल टाइम में ब्रॉडकास्ट-क्वालिटी कंटेंट बना सकते हैं।

एक्सक्लूसिव लेंस किट
हर मास्टरपीस की शुरुआत एक सही लेंस से होती है। EOS R50V एक खास लेंस किट के साथ आता है, जो पावर ज़ूम की सुविधा देता है, इससे परफॉर्मेंस और बेहतर बनाता है – हर फ्रेम में शार्पनेस, फ्लेक्सिबिलिटी और क्रिएटिव कंट्रोल के साथ।

अधिक जानकारी के लिए in.canon पर जाएं।

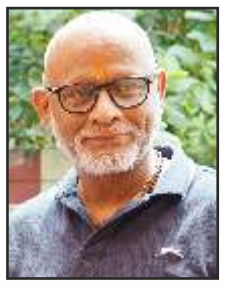

सम्पादक की कलम से ...

प्रिय फोटोग्राफर साथियों,

स्टूडियो न्यूज़ के अगस्त 2025 अंक में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। जब हम कैमरे की दुनिया की बात करते हैं, तो ज़्यादातर नज़रें सिर्फ़ लाइट, लेंस और लोकेशन तक सिमट जाती हैं। लेकिन जो लोग इस पेशे से दिल से जुड़े हैं, वे जानते हैं कि फोटोग्राफी सिर्फ़ एक क्लिक नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण है - जीने का तरीका है। फोटोग्राफर्स के लिए ये केवल करियर नहीं, बल्कि दुनिया को देखने और समझने का ज़रिया है। लेकिन इस सुंदर पेशे के पीछे आज जो तस्वीर उभर रही है, वह थोड़ी धुंधली है। इंडस्ट्री के भीतर एक असंतुलन साफ़ झलकता है - मेहनत की कीमत कम आँकी जा रही है, शिक्षा को हल्के में लिया जा रहा है, और फोटोग्राफर्स को "बस एक और रील" जैसे वाक्यों से कमतर समझा जा रहा है।

2025 की फोटोग्राफी इंडस्ट्री एक रोचक मोड़ पर खड़ी है - जहाँ तकनीक की तीव्र प्रगति, सौंदर्य की बदलती परिभाषाएं, और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना मिलकर एक नया दौर रच रही हैं। कैमरे के पीछे की दुनिया अब केवल दृश्य कैद करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह अब अनुभव, उद्देश्य और ज़िम्मेदारी का प्रतिनिधित्व भी करने लगी है। 2025 में फोटोग्राफी इंडस्ट्री में नए ट्रेंड देखने को मिल रहे है, उनको आपके साथ साझा करते हैं।

तकनीकी क्रांति की नई लहर की शुरूआत हुई है, सबसे बड़ा परिवर्तन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। AI का इस्तेमाल अब लगभग हर प्रोफेशनल वर्कफ़्लो का हिस्सा बन गया है।

इसी तरह, स्मार्टफ़ोन कैमरा तकनीक में ज़बरदस्त उन्नति ने पूरे परिदृश्य को बदल दिया है। एक ऐसा युग आ गया है जहाँ जेब में रखा फ़ोन भी प्रोफेशनल-लेवल इमेज क्वालिटी देने लगा है। यह बदलाव केवल सुविधाजनक नहीं, बल्कि इंडस्ट्री के प्रवेश द्वार को भी लोकतांत्रिक बना रहा है।

VR (वर्चुअल रिएलिटी) और AR (ऑगमेंटेड रिएलिटी) तकनीकों ने फोटोग्राफी को एक नया आयाम दिया है। अब दर्शक केवल तस्वीर देख नहीं रहे, बल्कि उसे महसूस कर रहे हैं - 360 डिग्री व्यू, इंटरेक्टिव एलिमेंट्स, और इमर्सिव एक्सपीरियंस इस क्षेत्र को पूरी तरह से फिर से परिभाषित कर रहे हैं। ड्रोन फोटोग्राफी ने भी खासतौर पर रियल एस्टेट, वेडिंग और डॉक्युमेंट्री के क्षेत्रों में नए दृष्टिकोण और नई ऊँचाइयाँ दी हैं।

सौंदर्यशास्त्र में बदलाव: रॉ और रियल की वापसी, 2025 में फोटो का सौंदर्य अब इंस्टाग्राम-परफेक्ट फ्रेम नहीं, बल्कि असलियत के करीब होता जा रहा है। ज़्यादा से ज़्यादा फोटोग्राफर अब पोज़्ड और चमकदार इमेजेज़ से हटकर नैचुरल, अनपोज़्ड और कैंडिड पलों को चुन रहे हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि आज का दर्शक नकलीपन से थक चुका है, वह वो कहानी देखना चाहता है जो सच्ची हो, कच्ची हो और भावनाओं से जुड़ी हो। डॉक्युमेंट्री स्टाइल स्टोरीटेलिंग तेजी से बढ़ रही है। चाहे वह किसी सामाजिक विषय पर आधारित फोटोसीरीज़ हो या किसी शादी की फोटोजर्नलिस्टिक कवरेज, लोग अब 'एक फ्रेम में पूरी कहानी' देखना चाहते हैं।

तकनीक बढ़ रही है, लेकिन मानवीयता भी ज़रूरी है, इस सारे तकनीकी विकास के बीच एक बात याद रखनी ज़रूरी है - कैमरा कितना भी स्मार्ट हो जाए, 'देखने' की समझ, 'महसूस करने' की संवेदनशीलता, और 'कहने' की ईमानदारी अभी भी मनुष्य से ही आती है। 2025 की फोटोग्राफी इंडस्ट्री जहाँ एक ओर नई तकनीकों एवं ट्रेंड्स से समृद्ध हो रही है, वहीं दूसरी ओर उसे यह भी याद रखना होगा कि हर फ्रेम के पीछे एक कहानी है, एक भावना है, और सबसे महत्वपूर्ण - एक इंसान है। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसी इंडस्ट्री की ओर बढ़ें - जो सिर्फ़ तेज़ नहीं, बल्कि सच में सार्थक हो।

आप और आपका परिवार सुखी एवं स्वस्थ रहे, ऐसी ईश्वर से कामना है। फोटोग्राफी से सम्बंधित किसी भी समस्या एवं जानकारी हेतु आप हमें 11 से 7 बजे तक इन दूरभाष 0522-4108575 / 0522-3654971 पर संपर्क कर सकते है।

सुरेंदर सिंह बिष्ट, सम्पादक

उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री मा० ब्रजेश पाठक द्वारा इंडिया फ़ोटो वीडियो एक्सपो 2025 का पोस्टर लॉन्च

फोटोग्राफर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश एवं बाईसेल इंट्रैक्शंस प्रा.लि. द्वारा लखनऊ में 19 से 21 सितम्बर 2025 को आयोजित होने वाले 'इंडिया फोटो एण्ड वीडियो एक्सपो' के चतुर्थ संस्करण के पोस्टर का अनावरण माननीय उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश ब्रजेश पाठक ने 21 जुलाई 2025 को किया।

मा. उप मुख्यमंत्री को PAUP के पदाधिकारियों दिनेश चंद्र वर्मा, सुरेंद्र सिंह बिष्ट, विकास बाबू, दीपक कपूर, राजीव टंडन, अमर सिंह, आशीष श्रीवास्तव एवं पिंकू शुक्ला ने पुष्पगुच्छ भेंट किया।

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

सोनी का नया RX1R III: फुल-फ्रेम प्रीमियम कॉम्पैक्ट कैमरा

सोनी ने अपने बहुप्रतीक्षित RX1R सीरीज के तीसरे संस्करण, RX1R III की घोषणा की है। इस कैमरे में 61-मेगापिक्सल का 35mm फुल-फ्रेम Exmor R™ CMOS इमेज सेंसर, लेटेस्ट BIONZ XR™ इमेज प्रोसेसिंग इंजन और ZEISS® Sonnar T* 35mm F2 लेंस दिया गया है।

Synology के नए NAS सिस्टम में 300TB से ज़्यादा स्टोरेज की सुविधा

Synology ने अपने दो नए DiskStation मॉडल लॉन्च किए हैं, जो Network Attached Storage (NAS) या Storage Area Network (SAN) के तौर पर काम कर सकते हैं। इन नए मॉडल DS1825+ और DS725+ में क्रमशः आठ और दो हार्ड ड्राइव लगाने की सुविधा है।

सोनी ने नया कॉम्पैक्ट शॉटगन माइक, ECM-778 लॉन्च किया

इसे पेशेवर फिल्म साउंड इंजीनियरों के साथ मिलकर बनाया गया है। सोनी का कहना है कि इसमें एक नया विकसित कैप्सूल और ब्रास अकॉस्टिक ट्यूब है, जो 20 kHz से ऊपर की फ्रीक्वेंसी सहित, स्पष्ट और विस्तृत ऑडियो प्रदान करता है।

Google Gemini अब तस्वीरों को वीडियो में बदल सकता है

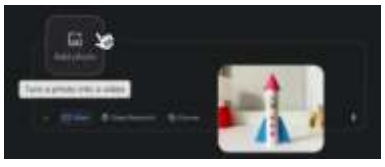

यह नया फीचर, जिसे Veo 3 नामक वीडियो जनरेशन मॉडल द्वारा संचालित किया गया है, उपयोगकर्ताओं को एक स्थिर तस्वीर को 8 सेकंड के वीडियो क्लिप में बदलने की सुविधा देता है। यह Google AI Pro और Ultra सब्सक्राइबरों के लिए चुनिंदा देशों में उपलब्ध है।

Godox ने पेश किए iT20/iT22 iFlash कैमरा फ्लैश

Godox ने अपने नवीनतम फ्लैश यूनिट iT20/iT22 iFlash लॉन्च किए हैं, जो अपनी कॉम्पैक्टनेस और सामर्थ्य के लिए जाने जाते हैं। ये फ्लैश TTL (Through The Lens) फंक्शन के साथ आते हैं, जो इन्हें इंडोर और आउटडोर, दोनों तरह की शूटिंग के लिए एकदम सही बनाता है।

Insta360 ने लॉन्च किया नया ड्रोन ब्रांड 'एंटीग्रेविटी'

Insta360 ने एक नया ड्रोन ब्रांड 'एंटीग्रेविटी' लॉन्च किया है, जिसका लक्ष्य एरियल एक्सप्लोरेशन और स्टोरीटेलिंग को फिर से परिभाषित करना है। यह ब्रांड दुनिया का पहला 360-डिग्री ड्रोन लेकर आया है, जिसमें इमर्सिव कैप्चर की सुविधा है। यह ड्रोन 249 ग्राम से कम वजन का है और 8K रिज़ॉल्यूशन में रिकॉर्डिंग करता है।

Viltrox ने लॉन्च किया नया वाइड-एंगल लेंस: Viltrox AF 15mm F1.7 Air

Viltrox ने अपने नए कॉम्पैक्ट वाइड- एंगल लेंस AF 15mm F1.7 Air की घोषणा की है। यह लेंस APS-C फॉर्मेट कैमरों के लिए डिज़ाइन किया गया है और Sony E, Nikon Z, और Fujifilm XF माउंट्स में उपलब्ध है। यह स्ट्रीट फोटोग्राफी, लैंडस्केप, वास्तुकला, व्लॉगिंग और इनडोर शॉट्स के लिए बेहतरीन है।

DJI ने लॉन्च किया Osmo 360 कैमरा

DJI ने 360-डिग्री कैमरा बाज़ार में अपनी पहली एंट्री Osmo 360 के साथ की है। इस कैमरे की सबसे बड़ी खासियत इसका 1-इंच 360° इमेजिंग सेंसर है, जो 360 कैमरा बाज़ार में सबसे शार्प तस्वीरें देता है। यह 8K/50fps 360° वीडियो शूट करने वाला पहला 360 कैमरा है। इसके अलावा, यह 8K/30fps पर लगातार 100 मिनट तक रिकॉर्डिंग कर सकता है।

सैमयांग (Samyang) ने अपने E-माउंट प्राइम सीरीज़ में दो नए लेंस जोड़े हैं: 85mm f/1.8 और 16mm f/2.8

ये दोनों लेंस, जिन्हें AF 16mm f/2.8 P FE और AF 85mm f/1.8 P FE नाम दिया गया है, उन फोटोग्राफरों और वीडियोग्राफरों के लिए "परफेक्ट" विकल्प हैं जो अभी शुरूआत कर रहे हैं या प्रयोग करना चाहते हैं। इन लेंसों को "प्राइमा सीरीज़" का हिस्सा बताया गया है, जिनका लक्ष्य आपका "पहला लेंस" बनना है, जिसे आप अक्सर इस्तेमाल करेंगे।

Atomos का नया Ninja TX: एडवांस्ड मॉनिटर-रिकॉर्डर

Atomos ने अपने अब तक के सबसे एडवांस्ड मॉनिटर-रिकॉर्डर, Ninja TX को लॉन्च किया है। कंपनी इसे "नेक्स्ट- जेनरेशन मॉनिटर-रिकॉर्डर" कह रही है, जिसे पेशेवर वीडियो क्रिएटर्स के लिए पूरी तरह से नया रूप दिया गया है। इसमें SDI और CFexpress कार्ड स्लॉट, इंटीग्रेटेड क्लाउड क्षमताएँ और बेहतर ओवरऑल परफॉरमेंस शामिल है।

सोनी का नया PXW-Z300 कैमकोर्डर

सोनी ने अपना नया PXW-Z300 हैंडहेल्ड XDCAM कैमकोर्डर लॉन्च किया है। यह फ्लैगशिप 4K कैमकोर्डर अपने वीडियो फ़ाइलों में सीधे डिजिटल सिग्नेचर एम्बेड करने की क्षमता रखता है, जिससे कंटेंट ऑथेंटिकेशन तकनीक का उपयोग संभव होता है। सोनी का दावा है कि यह ऐसा करने वाला दुनिया का पहला कैमकोर्डर है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि वीडियो असली है और उसे किसी AI या अन्य तरीके से जनरेट नहीं किया गया है।

Eizo ने नया DCI 4K ColorEdge मॉनिटर लॉन्च किया

ईज़ो, जो अपने पेशेवर और कलर-एक्यूरेट मॉनिटर के लिए जाना जाता है, ने 30.5 इंच का नया फ्लैगशिप ColorEdge CG3100X डिस्प्ले पेश किया है। यह मॉनिटर खास तौर पर पेशेवर HDR वर्कफ़्लो के लिए डिज़ाइन किया गया है।

Asus ने दो नए 4K HDR मॉनिटर लॉन्च किए

Asus ProArt PA27UCGE और PA32UCE नाम के ये दोनों मॉनिटर 4K (3840 x 2160) रेजोल्यूशन, IPS पैनल टेक्नोलॉजी और 600-निट्स की अधिकतम ब्राइटनेस जैसी कई खूबियों के साथ आते हैं। ये दोनों डिस्प्ले वाइड कलर सरगम और HDR सपोर्ट के साथ पेशेवर वर्कफ़्लो के लिए एकदम सही हैं।

इंस्टाग्राम पर लाइवस्ट्रीम करने के लिए अब 1,000 फॉलोअर्स होना ज़रूरी

इंस्टाग्राम ने अपने लाइव फीचर की पॉलिसी में बदलाव किया है। अब सिर्फ वही यूज़र्स लाइव जा पाएंगे जिनके पास एक पब्लिक अकाउंट हो और कम से कम 1,000 फॉलोअर्स हों। यह बदलाव छोटे क्रिएटर्स और आम यूज़र्स को सबसे ज़्यादा प्रभावित करेगा, जो पहले बिना किसी फॉलोअर लिमिट के लाइव आकर अपने दोस्तों और समुदाय से जुड़ते थे।

STUDIO NEWS
लखनऊ, बुधवार, 6 अगस्त 2025 से 5 सितम्बर 2025

‘एक अच्छी तस्वीर जानती है कि किस स्थान पर खड़ा होना है - एन्सल एडम्स

कैमरे के पीछे की अर्थव्यवस्था

हृदगंधा गिरीश मिस्त्री
एडवर्टाइजिंग फ़ोटोग्राफ़र एवं निदेशक,
गिरीश मिस्त्री की शैरी अकादमी, मंबुई

फोटोग्राफी ने मुझे सिर्फ़ एक करियर नहीं दिया, बल्कि जीने का एक नज़रिया दिया, एक ऐसा लेंस जिससे मैं दुनिया को देखती हूँ, और वह ताकत जिससे मैं उन कहानियों को कह पाती हूँ जो सच में मायने रखती हैं।

लेकिन आज जब मैं इस इंडस्ट्री को देखती हूँ, तो उसमें एक असंतुलन साफ़ दिखता है - एक नाज़ुक-सी अर्थव्यवस्था, जो समझौते किए हुए मूल्यों और अनदेखी मेहनत के सहारे खड़ी रहने की कोशिश कर रही है।

अब बात सिर्फ़ तस्वीरों की नहीं रही। बात उन चुपचाप दिए गए घंटों की है जिनका कोई हिसाब नहीं होता, उन प्रोफेशनलों की जो अपने मूल्य से नीचे काम करने को मजबूर हैं, उन इंटर्न्स की जिन्हें ठीक से समझा ही नहीं गया, और उस अंतहीन उम्मीद की जो हर रचनात्मकता को मुफ्त में पाने की कोशिश करती है।

और इस सबके बीच, फोटोग्राफी इंडस्ट्री की आत्मा धीरे-धीरे मिट रही है।

आइए, सिर्फ़ कैमरे पर नहीं, उस पूरी श्रृंखला पर ध्यान दें जो एक छात्र, एक मेंटर, एक फ़ोटोग्राफ़र, एक ब्रांड और एक क्लाइंट को जोड़ती है। और समझें कि इस इकोसिस्टम को ज़िंदा रखने के लिए हर कड़ी का मज़बूत होना ज़रूरी है।

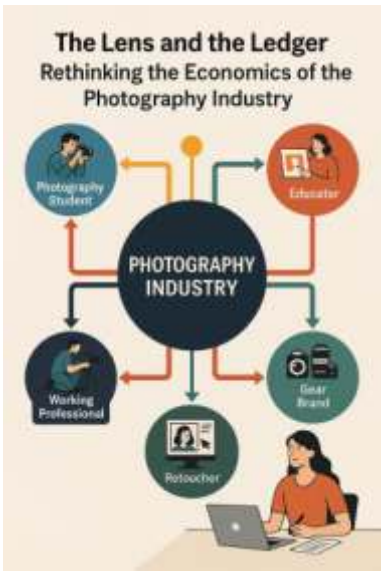

1. शिक्षा मुफ़्त नहीं है, और इसे कम नहीं आँकना चाहिए

मैं एक फोटोग्राफी स्कूल चलाती हूँ। मैंने वो चमक देखी है जो एक नए छात्र की आंखों में होती है, और वो संघर्ष भी महसूस किया है जो एक संस्थान को ज़िंदा रखने के लिए करना पड़ता है। एक अच्छा स्कूल सिर्फ़ कैमरों और गियर तक सीमित नहीं होता। वह छात्रों को मूल्य प्रणाली देता है - प्रोफेशनल दृष्टिकोण, नैतिकता और आत्मसम्मान सिखाता है।

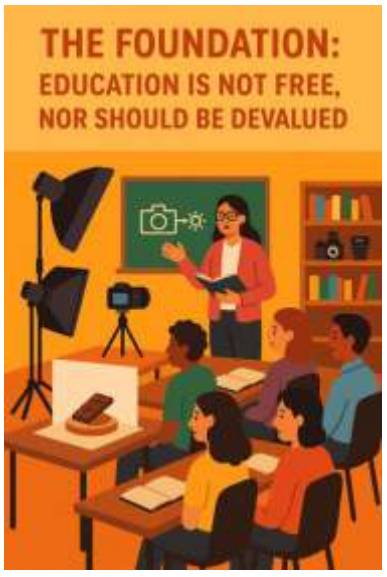

हमारे पास असली स्टूडियो हैं, अनुभवी शिक्षक हैं, आधुनिक उपकरण हैं और वर्षों की विरासत है जो हर पाठ में झलकती है। फिर भी लोग इसे बहुत कम कीमत पर, या मुफ्त में, पाने की उम्मीद रखते हैं।

जब छात्र शॉर्टकट अपनाते हैं, बिना सही मार्गदर्शन के कहीं भी अप्रेंटिस बन जाते हैं, तो वे उस नींव से चूक जाते हैं जो एक प्रोफेशनल बनने के लिए ज़रूरी होती है। और जब वे बिना बिज़नेस की समझ, गुणवत्ता या नैतिकता के मार्केट में आते हैं, तब इंडस्ट्री में दरारें दिखने लगती हैं।

शिक्षा कोई खर्च नहीं है। यह उस भविष्य का नक्शा है जिस पर पूरी इंडस्ट्री खड़ी है।

2. फ़ोटोग्राफ़र को कम आँकना बंद करें

फोटोग्राफ़ी सिर्फ एक क्लिक नहीं होती। यह वर्षों की मेहनत, असफलताओं, बदलावों और निरंतर विकास की कहानी होती है। एक प्रोफेशनल सिर्फ़ तस्वीरें नहीं खींचता, वह विज़न बनाता है, पहचान गढ़ता है, और अनुभव रचता है।

जब क्लाइंट कहते हैं, "थोड़ा डिस्काउंट कर दो" या "बस एक रील और जोड़ दो" - तो वे यह भूल जाते हैं कि वे केवल कुछ घंटों का काम नहीं, बल्कि एक पूरी ज़िंदगी का अनुभव खरीद रहे हैं।

हाँ, कोलैबोरेशन ज़रूरी हैं, और शुरूआती स्टोरीज़ भी प्रेरक होती हैं। लेकिन अगर हम कम मेहनताने पर बार-बार काम करते रहेंगे, तो सिर्फ़ खुद को ही नहीं, पूरी इंडस्ट्री को नीचा दिखा रहे होंगे।

आपकी फ़ीस सिर्फ़ पैसे की बात नहीं है - यह आत्म-सम्मान है। उसका सम्मान करें।

3. टूट चुकी है 'खरीदने की ताकत' की कड़ी

चलिए सच्चाई से बात करते हैं - अगर एक फ़ोटोग्राफ़र को उसके काम का उचित मेहनताना नहीं मिलेगा, तो वह नए कैमरे कैसे खरीदेगा? सॉफ़्टवेयर कैसे अपग्रेड करेगा? अपनी टीम को सैलरी कैसे देगा? और खुद कभी आराम कैसे करेगा?

यह केवल पैसों की बात नहीं है। यह मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और आगे बढ़ने की क्षमता से जुड़ा सवाल है। एक ऐसी इंडस्ट्री जहाँ फोटोग्राफ़र अपने ही औज़ार नहीं खरीद सकते, वह इंडस्ट्री जीवन-रक्षक मशीन पर चल रही है।

हमें यह सोचना बंद करना होगा कि "पैशन" को "पेमेण्ट" से ऊपर रखना ही सच्चा समर्पण है। फोटोग्राफ़ी एक गंभीर व्यवसाय है, जो गंभीर निवेश माँगता है - समय का भी और पैसे का भी।

4. ब्रांड्स से अपील : साथ चाहिए, पर न्याय भी चाहिए

गियर ब्रांड्स, सॉफ़्टवेयर कंपनियों और रेंटल हाउसेज़ - हम, फ़ोटोग्राफ़र, आपकी पहली पंक्ति हैं। लेकिन अगर आपकी ऑडियंस आपके प्रोडक्ट्स खरीद ही नहीं सकती, तो हम मिलकर किसके लिए बना रहे हैं?

सपोर्ट सिर्फ़ बड़े नामों को स्पॉन्सर करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। आपको उस कम्युनिटी को वापस भी कुछ देना होगा जो आपका बिज़नेस चलाती है। एजुकेटर्स के साथ काम कीजिए। स्केलेबल प्राइसिंग लाइए। प्रचार से ज़्यादा ज्ञान दीजिए।

और फोटोग्राफ़र्स, हमें भी यह आदत छोड़नी होगी कि हम हर चीज़ मुफ्त में पाने की उम्मीद रखें। **ईमानदारी से खरीदना, प्रोफेशनल ईमानदारी का ही हिस्सा है।**

5. कंटेंट बहुत, लेकिन मूल्य बहुत कम

हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जो पूरी तरह से विज़ुअल कंटेंट पर चलती है। हर लॉन्च, हर पोस्ट, हर जश्न को एक कहानी चाहिए, लेकिन किसी कारणवश, उस कहानी कहने वाले की क़ीमत लगातार गिर रही है।

आज की सबसे आम विवरण बन गया है : "तेज़, सस्ता, वायरल।" लेकिन अगर हम समय लेकर बनी, सोच-समझकर खींची गई इमेजरी की अहमियत क्लाइंट्स को याद नहीं दिलाएंगे, तो हम खुद अपनी रचनात्मक कब्र खोद रहे हैं।

कम बनाइए, लेकिन बेहतर बनाइए। स्क्रोल में फिर से रूह वापस लाइए।

6. इंटर्न मुफ़्त का श्रम नहीं हैं

ये बात दिल को छूती है। मैंने ऐसे छात्रों को देखा है जिनकी आँखों में चमक होती है, सीखने की चाह होती है, लेकिन जब उन्हें सस्ते मज़दूर की तरह इस्तेमाल किया जाता है, तो धीरे-धीरे उनका जोश बुझने लगता है।

स्टार्टअप्स हमसे अक्सर यह उम्मीद करते हैं कि हमारे छात्र कैमरा लेकर उनकी पूरी मार्केटिंग शूट कर दें - बिना पैसे, बिना मेंटरशिप, बिना सम्मान के।

सीखने की प्रक्रिया का नाम शोषण नहीं है। इंटर्न्स मज़दूर नहीं, विद्यार्थी होते हैं। अगर वे आपके ब्रांड के लिए शूट कर रहे हैं, तो आपको उन्हें सिर्फ़ "एक्सपोज़र" नहीं, असली अवसर और मार्गदर्शन देना चाहिए।

एक छात्र जिस तरह से व्यवसाय से जुड़ता है, वह इस बात से तय होता है कि व्यवसाय उससे कैसा व्यवहार करता है।

7. अब हमें क्या करना चाहिए?

- **शिक्षक :** छात्रों को सिर्फ़ एक्सपोजर या आई.एस.ओ. नहीं सिखाइए - उन्हें सर्वाइव और सक्सेस की स्किल्स दीजिए। प्राइसिंग, कॉन्ट्रैक्ट्स, लाइसेंसिंग और नैतिकता की बातें कीजिए।
- **फोटोग्राफर :** अपनी क़ीमत पर अडिग रहिए। आपकी दरें ही पूरी इंडस्ट्री की पहचान तय करती हैं। एक छोटा प्रोजेक्ट जीतने के लिए अपनी पहचान मत खोइए।
- **ब्रांड :** प्रचार नहीं, पार्टनरशिप बनाइए। उन हाथों को सपोर्ट कीजिए जो आपके प्रोडक्ट्स का प्रचार करते हैं।
- **क्लाइंट :** जानिए कि हर फ्रेम के पीछे कितना कुछ होता है। आप केवल तस्वीरें नहीं खरीद रहे बल्कि आप एक दृष्टि में निवेश कर रहे हैं।
- **छात्र :** गहराई से सीखिए। सवाल पूछिए। और यह कभी मत सोचिए कि मुफ्त काम ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है।

निष्कर्ष: चलिए वो इंडस्ट्री बनाएं, जिसका हिस्सा होने पर गर्व हो

मेरे लिए यह लेख व्यक्तिगत है। मैंने दशकों इस इंडस्ट्री में नए टैलेंट को गढ़ा है, प्लेटफॉर्म बनाए हैं, और एक ऐसे क्षेत्र में व्यवसायिकता की पैरवी की है, जिसे अक्सर हल्के में लिया जाता है। लेकिन मैंने यह भी देखा है कि कैसे फोटोग्राफ़र टूट जाते हैं, छात्र कम में समझौता कर लेते हैं, और ब्रांड्स अक्सर अनिश्चित क्षेत्र का लाभ उठा लेते हैं।

पर ऐसा होना ज़रूरी नहीं है। हम एक ऐसी फोटोग्राफी इंडस्ट्री बना सकते हैं जो गरिमा, न्याय और सहयोग पर खड़ी हो। जहाँ जुनून के साथ-साथ भुगतान भी हो। जहाँ प्रतिभा को मौके मिलें। जहाँ लेंस कहानियाँ बयां करें, और लेखा-जोखा उन्हें सम्मान दे।

सिर्फ़ अच्छी तस्वीरें खींचना ही काफी नहीं है, आइए, उनके पीछे की दुनिया को भी बेहतर बनाएं।

'दुनिया में ऐसी कई चीजें हैं जिनका चित्र अगर मैंने नहीं लिया होता तो मुझे लगता है दुनिया उन्हें देखने से वंचित रह जाती। - डायना अर्बुस

महान विभूतियाँ

रॉबर्ट फ्रैंक
(नवंबर 1924 - सितंबर 2019)

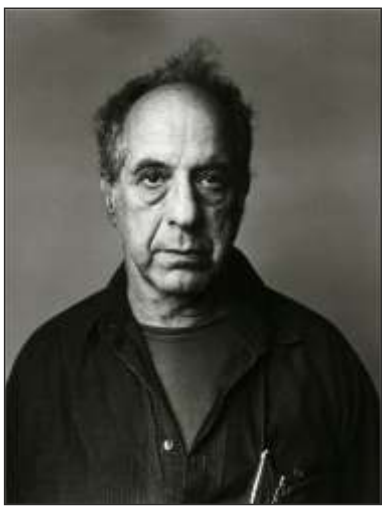

रॉबर्ट फ्रैंक

रॉबर्ट फ्रैंक, 20वीं सदी के महानतम फोटोग्राफरों में से एक, का जन्म 9 नवंबर 1924 को ज़्यूरिख़, स्विट्ज़रलैंड में हुआ था, जहाँ उन्होंने शुरू में एक स्टूडियो फोटोग्राफर के रूप में प्रशिक्षण लिया।

हालाँकि, स्विस पेशेवर दुनिया की सीमाओं को महसूस करते हुए वे जल्दी ही पेरिस चले गए, जहाँ उन्होंने कई हाथ से बने एलबम तैयार किए - जिनमें उनका पहला पोर्टफोलियो "40 फोटोज" (1946) शामिल है। इसके बाद वे 1947 में एंटवर्प से एक नाव द्वारा न्यूयॉर्क पहुंचे। वहाँ उन्हें प्रसिद्ध आर्ट डायरेक्टर एलेक्सी ब्रोडोविच के कार्यकाल में हार्पर्स बाजार में काम मिला। साथ ही उन्होंने Vogue, Life और Fortune जैसी कई प्रसिद्ध पत्रिकाओं के लिए स्वतंत्र रूप से भी काम किया। रॉबर्ट फ्रैंक वास्तव में एक अग्रणी फोटोग्राफर थे, जिन्होंने 20वीं सदी की कुछ सबसे प्रभावशाली और नया दृष्टिकोण देने वाली तस्वीरें बनाई थीं।

व्यावसायिक कामों में रॉबर्ट फ्रैंक की खास दिलचस्पी नहीं थी। जल्द ही उन्होंने दक्षिण अमेरिका की यात्राओं की एक श्रृंखला शुरू की, जिसमें वे रास्ते में देखी गई चीज़ों को अपनी तस्वीरों में दर्ज करते गए। 1950 तक, उनके काम ने न्यूयॉर्क के म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट के तत्कालीन निदेशक और क्यूरेटर एडवर्ड स्टाइकेन को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने फ्रैंक को "51 अमेरिकन फोटोग्राफर्स" नामक एक प्रदर्शनी में शामिल किया।

1950 के दशक के मध्य में रॉबर्ट फ्रैंक एक बार फिर यात्रा पर निकल पड़े, इस बार वह प्रोजेक्ट शुरू कर रहे थे जो आगे चलकर उनकी सबसे प्रसिद्ध और पसंदीदा किताब बनने वाली थी। उन्होंने अमेरिका के अलग-अलग हिस्सों में रोड ट्रिप्स की एक लंबी श्रृंखला शुरू की, जिनमें उन्होंने करीब 10,000 मील की दूरी तय की और दो वर्षों में लगभग 28,000 तस्वीरें खींचीं। इस यात्रा के दौरान, फ्रैंक अमेरिका को वैसे दिखाना चाहते थे जैसा वह वास्तव में है - एक ऐसा देश जो तनाव और बदलाव से गुज़र रहा था। जहाँ गरीबी और अकेलापन आम था, नस्लभेद साफ नजर आता था, और जहाँ पुराने और नए मूल्यों के बीच टकराव लगातार चल रहा था।

इस हैरान कर देने वाली 28,000 तस्वीरों की संख्या को बाद में घटाकर सिर्फ 83 तस्वीरों तक सीमित किया गया, जो रॉबर्ट फ्रैंक की मशहूर किताब "The Americans" में शामिल की गईं। यह किताब सबसे पहले 1958 में फ्रांस में प्रकाशित हुई, और इसके अमेरिकी संस्करण का प्रकाशन अगले साल (1959) में हुआ। इस किताब की काफी सराहना हुई, और प्रसिद्ध लेखक जैक केरूआक ने तो यहाँ तक कहा कि "फ्रैंक ने एक परछाईं की तरह फुर्ती, रहस्य, प्रतिभा, उदासी और अजीब सी चुप्पी के साथ वो दृश्य कैमरे में कैद किए हैं, जो पहले कभी फिल्म में नहीं देखे गए थे।"

रॉबर्ट फ्रैंक की 35mm लाइका कैमरे से ली गई ब्लैक-एंड-व्हाइट तस्वीरें बाकी

किसी व्यक्ति की तस्वीर को ज्यों का त्यों उतार देना एक बात है पर एक काबिल फोटोग्राफर उस व्यक्ति की आत्मा को भी उस तस्वीर में कैद कर सकता है। - पॉल कपोनिग्रो

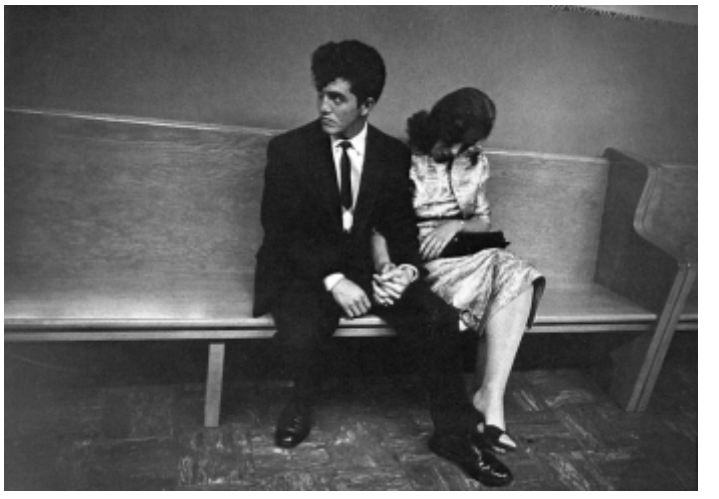

फोटोग्राफरों की चमक-दमक से बिल्कुल अलग थीं। उनमें अक्सर अनगढ़ कोनों, असंतुलित फ्रेमिंग और एक भटकती नज़र की झलक मिलती थी, जैसे कैमरा कभी रूकता ही नहीं, बस देखते-देखते आगे बढ़ जाता है। उनकी तस्वीरों में दिखाई देते हैं, अंत्येष्टि स्थल, ड्राइव-इन थिएटर, हाइवे, बाथरूम, चर्च, नस्लीय रूप से विभाजित ट्रॉली, और खिड़कियों से झांकती अजनबी ज़िंदगियों की झलकें। फ्रैंक का मक़सद था अमेरिका को उसकी पूरी सच्चाई और जटिलताओं के साथ दिखाना, एक ऐसा समाज जो परस्पर विरोधों, उलझनों और बदलावों से भरा हुआ था।

1974 में, जब उनकी बेटी आंद्रेया की मात्र 20 वर्ष की उम्र में ग्वाटेमाला में एक विमान दुर्घटना में दुखद मृत्यु हो गई, तो उन्होंने एक बार फिर कैमरे की ओर रूख किया। बाद में, 1994 में उनके बेटे पाब्लो ने आत्महत्या कर ली, जिससे उनकी पीड़ा और भी गहराती चली गई। इस गहरे दुख के दौर में, फ्रैंक ने टुकड़ों में बंटा हुआ काम करना शुरू किया जिसमें पोलरॉइड तस्वीरें, पोस्टकार्ड, और खरोंचे हुए नेगेटिव शामिल थे। यह उनके काम में एक स्पष्ट बदलाव का संकेत था, जिसे उन्होंने खुद इस तरह व्यक्त किया: "अब मैं वो नहीं दिखा रहा था जो मैंने देखा, बल्कि वो जो मैंने महसूस किया।"

अब, जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो रॉबर्ट फ्रैंक का विशाल और विविधतापूर्ण करियर कैमरे और वास्तविकता के रिश्ते में आए एक बड़े बदलाव को दर्शाता है। उनका काम उसी संवेदनशील नजरिए का हिस्सा लगता है, जिसमें विवियन मायर और डायने आर्बस जैसे अन्य फोटोग्राफरों की झलक मिलती है। उनकी पूरी रचनात्मकता इस बात की ओर इशारा करती है कि वे एडवर्ड हॉपर की हल्की रोशनी में डूबी हुई अकेली दुनिया से प्रभावित थे, जबकि उन्होंने अति-सुचारू कंपोज़िशन पर ज़ोर देने वाले हेनरी कार्तिए-ब्रेसों के दृष्टिकोण को नज़रअंदाज़ कर दिया। रॉबर्ट फ्रैंक का सबसे बड़ा इरादा यही था - ऐसे लम्हों की तलाश करते रहना (और लगातार उसे कैप्चर करना) जिनका कोई आसान स्पष्टीकरण नहीं था। वे अनकहे, अधूरे, और असमझे पलों के सच्चे खोजी थे।

20वीं सदी के महानतम फोटोग्राफरों में से एक रॉबर्ट फ्रैंक का 94 वर्ष की आयु में 9 सितंबर, 2019 को कनाडा के इनवर्नेस शहर में निधन हो गया।

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP (France), ARPS (Great Britain), Hon.FIP (India), Hon.LCC (India), FFIP (India), AIIPC (India), Hon.FSoF (India), Hon.FPAC (India), Hon.TPAS (India), Hon.FSAP (India), Hon.FICS (USA), Hon.PSGSPC (Cyprus), Hon.FPSNJ (America), Hon. Master-TPAS (India), Hon. Master-SAP (India), Hon.FWPAI (India), Hon.FGGC (India), Hon.GA-PSGSPC (Cyprus)
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

भारत में वेडिंग फोटोग्राफर बनने की असली चुनौतियाँ

वेडिंग फोटोग्राफी का बाजार तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसमें सफलता एक रात में नहीं मिलती। यह लेख बताता है कि नए फोटोग्राफरों के लिए इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना और टिके रहना वास्तव में कितना मुश्किल होता है।

एक ऐसे देश में जहाँ शादियाँ पवित्र, भव्य और भावनाओं से भरी होती हैं, वहाँ वेडिंग फोटोग्राफर बनना उतना ग्लैमरस नहीं है जितना बाहर से दिखता है। यह एक ऐसा हुनर है जो शारीरिक सहनशक्ति, सांस्कृतिक समझ, तकनीकी सटीकता और उन रस्मों की गहरी जानकारी की माँग करता है जो पल-पल में बदलती रहती हैं।

भारत में शादियाँ केवल रस्में नहीं होतीं, बल्कि यह पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक परंपराएँ होती हैं। ये शादियाँ प्रतीकों, भावनाओं और उम्मीदों से भरपूर होती हैं, कई दिनों तक चलती हैं, और इनमें ऐसा दृश्यात्मक कहानी कहने का हुनर चाहिए जो शायद ही किसी और काम में लगे। हालाँकि सोशल मीडिया ने वेडिंग फोटोग्राफी को एक स्टाइलिश और फायदेमंद पेशा दिखाया है, लेकिन हकीकत इससे कहीं ज़्यादा जटिल है - खासकर उनके लिए जो अभी इस क्षेत्र में कदम रख रहे हैं।

हर साल भारत में 1 करोड़ से ज़्यादा शादियाँ होती हैं - जिससे वेडिंग इंडस्ट्री बहुत बड़ी, प्रतिस्पर्धा से भरी और सांस्कृतिक रूप से बेहद गहरी बन जाती है। जहाँ यह संख्या मौके दिखाती है, वहीं इसका मतलब यह भी है कि उम्मीदें बहुत ऊँची होती हैं। परिवार फोटोग्राफर पर सिर्फ पैसा ही नहीं, बल्कि अपनी भावनात्मक ज़िम्मेदारी भी सौंपते हैं। आख़िरकार, शादी की तस्वीरें केवल यादें नहीं होतीं - ये पारिवारिक विरासत बन जाती हैं।

चमक-धमक के पीछे की हकीकत

बाहर से लोगों को अक्सर लगता है कि शादी का फोटोग्राफर बनना अपने हुनर से कामयाबी पाने का सबसे आसान तरीका है। उन्हें इसका आकर्षक पहलू दिखता है: खूबसूरत जगहों पर शूटिंग करना, शानदार शहरों की यात्रा करना, बेहतरीन लोगों से मिलना, और "मज़ेदार" काम करते हुए अच्छी कमाई करना।

लेकिन यह तो बस कहानी का एक पहलू है। जो लोग बाहर से देखते हैं, वे नहीं देख पाते उन अनगिनत रातों की नींदें, हर पल बेहतर काम करने का दबाव, अलग-अलग जगहों पर टीमों को संभालने की भागदौड़, और हर जरूरी पल पर ठीक उसी जगह मौजूद रहने की ज़िम्मेदारी। इसके साथ जोड़ दीजिए जबरदस्त प्रतिस्पर्धा, लगातार बदलती क्लाइंट की उम्मीदें, और बहुत कम समय में डिलीवरी का तनाव, तब समझ आता है कि वेडिंग फोटोग्राफी जितनी दिखती है, उतनी आसान नहीं है। वेडिंग फोटोग्राफी एक सपना ज़रूर है, लेकिन इसमें हर पल सतर्क रहना, हर फ्रेम को सोच-समझकर कैद करना, और हर चुनौती के सामने डटे रहना शामिल है।

प्रिय पाठकों,

आपमें से कई लोग पहले से ही वेडिंग फोटोग्राफी की दुनिया से जुड़े हुए हैं, इसलिए जो कुछ भी मैं यहां साझा कर रहा हूँ, वह हमारे साझा अनुभव और चिंता से जुड़ा है। जब लोग भारत में वेडिंग फोटोग्राफी के अवसरों की बात करते हैं-क्योंकि यहाँ हर साल बहुत सी शादियाँ होती हैं-तो वे अक्सर यह भूल जाते हैं कि यह पेशा वास्तव में कितना मेहनत भरा और जटिल होता है। बाहर से देखने पर यह सब बहुत ग्लैमरस लगता है-बेहतरीन कैमरे, सुंदर लोकेशन, मज़ेदार माहौल और अच्छी कमाई। यहाँ तक कि नए सीखे हुए फोटोग्राफर भी इस क्षेत्र में उतरने को उत्साहित रहते हैं, यह सोचकर कि अगर उनके पास सही कैमरा और लेंस हैं, तो वे सफल हो सकते हैं। लेकिन वे यह नहीं समझते कि इसमें सीखने की एक कठिन प्रक्रिया होती है, लगातार दबाव बना रहता है, और शादी की कहानी को सही ढंग से दिखाने के लिए सांस्कृतिक समझ भी बेहद जरूरी है। असल परेशानी तब शुरू होती है जब कुछ लोग बिना किसी अनुभवी प्रोफेशनल के साथ असिस्ट किए, या बिना खुद की एक अलग विज़ुअल स्टाइल विकसित किए, सिर्फ कम दामों में काम करने लगते हैं। बजट क्लाइंट्स के लिए काम करना गलत नहीं है, लेकिन अगर आप सिर्फ कम कीमत पर काम देकर क्वालिटी नहीं दे पा रहे, तो इससे क्लाइंट को भी नुकसान होता है और इंडस्ट्री को भी। यह लेख उन फोटोग्राफरों के लिए है जो हाल ही में इस फील्ड में आए हैं या आने की सोच रहे हैं। मेरी कोशिश है कि मैं आपको भारत में वेडिंग फोटोग्राफर बनने की असली चुनौतियों की एक साफ़ तस्वीर दिखा सकूं।

रस्मों की असली परीक्षा

एक पारंपरिक भारतीय शादी, खासकर हिंदू रीति-रिवाज़ों वाली, कई दिनों तक चलती है और इसमें ढेरों रस्में शामिल होती हैं - जैसे मेहंदी, हल्दी, संगीत, गणेश पूजन, बारात, जयमाला, सप्तपदी, कन्यादान, सिंदूरदान, मंगल फेरे, विदाई और गृह प्रवेश। इनमें से हर एक पल कहानी कहने के लिए दृश्यों से भरपूर होता है, लेकिन साथ ही इनके समय और भावनाओं का अनुमान लगाना भी मुश्किल होता है।

फोटोग्राफर को न सिर्फ यह पता होना चाहिए कि क्या शूट करना है और कब करना है, बल्कि सबसे ज़रूरी यह समझना होता है कि वह पल इतना महत्वपूर्ण क्यों है। अगर सप्तपदी (पवित्र अग्नि के चारों ओर लिए गए सात फेरे) या भावनाओं से भरा कन्यादान कैमरे से छूट गया, तो समझिए शादी की आत्मा ही क़ैद नहीं हो पाई। विदाई का वह नम पल, और गृह प्रवेश का वो भावनात्मक क्षण, जब दुल्हन अपने नए घर में पहला कदम रखती है, ये ऐसे पल हैं जिन्हें सिर्फ तकनीक से नहीं, दिल की गहराई से महसूस करके शूट किया जा सकता है। और सबसे अहम बात - यह कोई स्टूडियो शूट नहीं है, जहाँ दूसरा टेक लिया जा सके। यहाँ हर पल बस एक बार होता है।

सांस्कृतिक समझ बेहद ज़रूरी

भारत में शादियाँ क्षेत्र, धर्म और समुदाय के अनुसार बहुत अलग-अलग होती हैं। एक तमिल ब्राह्मण शादी का स्वरूप एक मारवाड़ी या बंगाली शादी से बिल्कुल भिन्न होता है। सिख शादियों की अपनी एक अलग लय होती है, तो ईसाई और मुस्लिम शादियों की अपनी परंपराएँ और रस्में होती हैं। शादी के हर पड़ाव का अपना एक अर्थ, एक गति और एक भावना होती है - उसे समझना एक फोटोग्राफर की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है। यह सांस्कृतिक समझ ही एक फोटोग्राफर को उन अनमोल पलों को सही मायने में कैद करने में मदद करती है जो हर शादी को खास बनाते हैं।

ऐसी सांस्कृतिक समझ कोई शॉर्ट टर्म फोटोग्राफी कोर्स नहीं सिखा सकता। कैमरे को सही तरीके से चलाना, लाइटिंग को समझना और लगातार अभ्यास करना ज़रूरी तो है ही, लेकिन इससे आगे की जो यात्रा है - वह जिज्ञासा, ध्यानपूर्वक सुनने की क्षमता, परिवारों के साथ की गई गहराई से पूर्व-योजना, और अक्सर शुरू में चुपचाप सब कुछ महसूस करने से होकर ही गुजरती है। एक सच्चा फोटोग्राफर पहले एक संवेदनशील दर्शक बनता है, फिर धीरे-धीरे एक दृश्यात्मक कहानीकार में बदलता है।

कैमरे से आगे की दुनिया : एक फोटोग्राफर की असली कला

हां, फोटोग्राफ़र को तकनीकी रूप से माहिर होना ज़रूरी है-लाइट, लेंस, कम्पोज़िशन और पोस्ट-प्रोसेसिंग की समझ होना चाहिए। लेकिन असली सफलता तो लोगों से जुड़ने की कला में है: परिवार की भावनाओं को समझना, तनाव भरे पलों को सहजता से संभालना, उथल-पुथल के बीच शांति बनाए रखना और हर पल बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना।

जब कोई पल बहुत निजी होता है, तो फोटोग्राफ़र को बिलकुल चुपचाप काम करना होता है। लेकिन जब बड़ी फैमिली फोटो खिंचवानी हो या मेहमानों को संभालना हो, तब उसे पूरे आत्मविश्वास के साथ सामने आना पड़ता है। यह एक ऐसा नृत्य है, जिसमें कभी खुद को छुपाना होता है, और कभी सबकी नज़रों में आना।

सिर्फ रचनात्मकता नहीं, दमखम भी चाहिए

भारतीय शादियाँ कोई छोटी दौड़ नहीं होतीं - ये तो एक लंबी रेस होती हैं। शूटिंग दिन में 15 से 18 घंटे तक चल सकती है, जहां आराम कम और अपेक्षाएँ बहुत ज़्यादा होती हैं। ऊपर से भारी कैमरा गियर उठाना, एक जगह से दूसरी जगह दौड़ना, और फिर हज़ारों तस्वीरों को तय समय में एडिट करना - यह सब शरीर और मन दोनों को थका देता है। थकावट असली है, और वही टिकते हैं जिनमें सच्चा जुनून होता है।

क्लाइंट की उम्मीदों का फासला

आज के क्लाइंट Instagram रील्स से प्रभावित हैं। वे हर फ्रेम में जादू चाहते हैं - कई बार यह भूलते हुए कि लाइव इवेंट्स की अपनी अनिश्चितताएं होती हैं। उनसे यह उम्मीद की जाती है कि फोटोग्राफ़र हर पल को परफेक्ट बना दे - चाहे वो कैंडिड मूमेंट हो या ड्रोन से लिया गया सिनेमैटिक शॉट - और साथ ही परिवार की ज़रूरतें, आखिरी पल के बदलाव और बाकी सभी व्यवस्थित चुनौतियाँ भी समझे।

इसका मतलब है लगातार संवाद बनाए रखना, शुरूआत में ही साफ़ उम्मीदें तय करना, और बहुत सलीके से क्लाइंट को यथार्थ की ओर मार्गदर्शित करना - वो भी बिना अपनी रचनात्मकता पर से विश्वास खोए।

आख़िरी फ्रेम (निष्कर्ष)

भारत में वेडिंग फोटोग्राफर बनना सिर्फ़ एक अच्छा कैमरा रखने या सोशल मीडिया पर लाइक्स बटोरने का काम नहीं है। **इसके लिए चाहिए सांस्कृतिक समझ, रचनात्मक नज़र, शारीरिक दमखम और गहरी संवेदनशीलता-साथ ही वो हुनर जिससे हर पल को खूबसूरती से सहेजकर एक एल्बम में अमर किया जा सके।**

यह कोई एक बार का काम नहीं है। अगर सही ढंग से किया जाए, तो यह परिवारों से लंबे समय तक जुड़ाव और एक स्थिर, सम्मानजनक आय का जरिया बन सकता है। केवल कम कीमत पर काम लेकर बुकिंग पाना आसान है, लेकिन इससे न तो आपकी कला निखरती है, न ही असली पहचान बनती है।

असल में, वेडिंग फोटोग्राफ़ी प्यार, परंपरा और नए आरंभ की कहानियों को संजोने की कला है-वो भी बिना कोई पल खोए। जो लोग पूरी ईमानदारी से इस रास्ते को अपनाते हैं, उनके लिए यह सबसे संतोषजनक क्रिएटिव करियर बन सकता है। लेकिन यह बिल्कुल भी आसान नहीं है।

अगर आप अभी शुरूआत कर रहे हैं, तो याद रखिए-यह राह समय, धैर्य और विनम्रता माँगती है। अपने हुनर को तराशिए। संस्कृति का सम्मान कीजिए। भावनाओं को समझिए। शॉर्टकट नहीं, गुणवत्ता और सेवा के बल पर अपनी पहचान बनाइए।

यकीन मानिए, तब आप सिर्फ़ तस्वीरें नहीं लेंगे-**बल्कि ज़िंदगी के सबसे पवित्र पलों के विश्वसनीय कहानीकार बन जाएंगे।**

विमल परमार
Independent Marketing Consultant
Digital Print Evangelist
@vimalparmar

PAUP द्वारा जनपद इटावा में फोटोग्राफी एवं लाइटिंग वर्कशाप

2 अगस्त 2025 को जनपद इटावा में फोटोग्राफर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश द्वारा एक्सपर्ट आचार्य कुलदीप कुमार सिंह द्वारा फोटोग्राफी एवं लाइटिंग की वर्कशॉप में फोटोग्राफी, लाइटिंग, कैमरा सेटिंग आदि की विशेष जानकारी दी गई।

फोटोग्राफर साथियो, आप अपने जिले में होने वाली फोटोग्राफी वर्कशॉप, संगोष्ठी या फोटोग्राफी से सम्बन्धित अन्य किसी कार्यक्रम का विवरण एवं फोटो "स्टूडियो न्यूज" में छपवाने के लिये, **mailtostudionews@gmail.com** पर मेल करें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, बुधवार, 6 अगस्त 2025 से 5 सितम्बर 2025

मेरे विचार में फोटोग्राफी रात में चुपचाप, दबे पावँ रसोई में जाकर ओरियो कुकी खाने के समान है। - डायना अर्बुस

लखनऊ में हुआ आर्किटेक्चर व इंटीरियर फोटोवॉक का आयोजन

मोबिलोग्राफर्स फोटोग्राफी ग्रुप द्वारा टाइपा फोटोग्राफी क्लब के सहयोग से लखनऊ में फोटोवॉक का आयोजन 3 अगस्त 2025 को किया गया। यह फोटोवॉक कई मायनो में दूसरी फोटोवॉक से अलग रही। आयोजन स्थल के रूप में **'द-सेंट्रम'** होटल को चुना गया जहाँ प्रतिभागी फोटोग्राफरों ने आर्किटेक्चर, इंटीरियर जैसी फोटोग्राफी विधाओं में अपने हाथ आज़माए। जहाँ एक तरफ आर्किटेक्चर फोटोग्राफी में भवनों और संरचनाओं की बाहरी या आंतरिक संरचनाओं को सौंदर्यपूर्ण तरीकों से कैप्चर किया जाता है, ताकि उनकी वास्तुकला और रूप-रंग स्पष्ट रूप में सामने आएँ। वहीं इंटीरियर फोटोग्राफी किसी कमरे या इंटीरियर्स के डिजाइन, सजावट, प्रकाश व्यवस्था और माहौल को दिखाने के लिए की जाती है। सही कोण से उस स्थान के कलात्मक पक्ष को उजागर करने की कोशिश की जाती है।

द-सेंट्रम होटल आधुनिक स्थापत्य कला का एक खूबसूरत नमूना है जिसमें लखनऊ से जुडी विभिन्न कलाओं व नवाबी दौर की विभिन्न इमारतों के डिज़ाइन एलिमेंट्स का भी इस्तेमाल किया गया है। मॉडर्न आर्किटेक्चर के साथ लखनऊ की पुरानी विरासत से जुड़े डिज़ाइन एलिमेंट्स का बखूबी इस्तेमाल यहाँ देखने योग्य है। हर कोना इतनी खूबसूरती से डिज़ाइन किया व सजाया गया है कि आर्किटेक्चर फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए नई संभावनाए पैदा करता है। शायद यही बात प्रतिभागियों को आकर्षित कर गई। कार्यक्रम के समन्वयक अतुल हुंडू ने प्रतिभागियों आर्किटेक्चर व इंटीरियर फोटोग्राफी से जुड़े टिप्स दिए।

मौसम की नाइंसाफी के बावजूद सुबह सवेरे फोटोवॉक में 85 प्रतिभागी पूरी शिद्दत के साथ तस्वीरें लेते दिखाई दिए। फोटोवॉक शुरू होने से पहले प्रतिभागियों को होटल से जुडी एक डॉक्यूमेंट्री दिखा कर होटल की अलग-अलग लोकेशंस दी गई और इसके बाद होटल की विभिन्न लोकेशंस पर गाइडेड टूर भेजे गए ताकि होटल में रहने वाले गेस्ट्स को बिना परेशान किये फोटोग्राफर पूरा होटल अच्छी तरह एक्स्प्लोर कर सकें।

होटल के रेस्टॉरेंट से लेकर अलग-अलग कॉरिडोर, जिम, विभिन्न एंट्री व एग्जिट पॉइंट्स पार्टिसिपेंट के लिए सब्जेक्ट बन गए थे। इस अवसर पर प्रतिभागियों द्वारा ली गई तस्वीरो में से चुनी गई तस्वीरों की प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाए जाएगा। इस अवसर पर लखनऊ के सम्मानित छायाकार मनोज छाबडा, संदीप रस्तोगी, साहिल सिद्दीकी, दीपक गुप्ता, बिंदु अरोरा, गीतिका त्रिपाठी व कला एवं शिल्प महाविद्यालय, एमिटी यूनिवर्सिटी, एरा यूनिवर्सिटी, ख्वाजा मोईनुद्दीन यूनिवर्सिटी व शहर के कई सम्मानित संस्थानों के छात्र-छात्राएं भी उपस्थित थे।

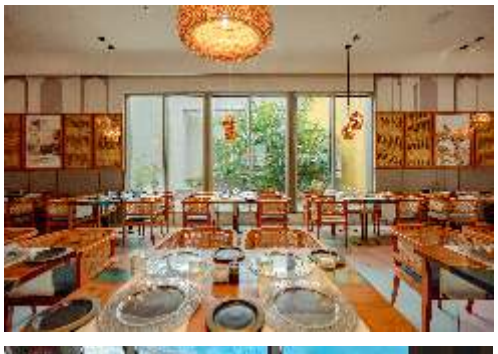

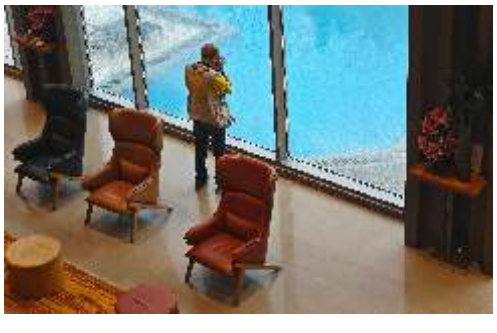

कैमरा मोड - प्रोग्राम ऑटो मोड

अभिनीत मोहन सेठ
चाइल्ड फोटोग्राफर

(गतांक से आगे)

हेलो दोस्तों उम्मीद है आप सब अच्छे होंगे। पिछली बार हम लोगो ने कैमरे में बेसिक सेटिंग्स के बारे में समझने की कोशिश की थी। इस बार हम लोग कैमरा मोड्स के बारे में डिटेल्ड में डिस्कशन करेंगे। अगर फोटोग्राफी में आपको इम्प्रूव करना हैं तो कैमरा मोड्स के बारे में जानकारी होना बहुत ही जरूरी होता है। कैमरे में 4 इम्पोर्टेन्ट मोड्स होते हैं :-

- **प्रोग्राम ऑटो मोड**
- **शटर प्रायोरिटी मोड**
- **अपर्चर प्रायोरिटी मोड**
- **मैन्युअल कैमरा मोड**

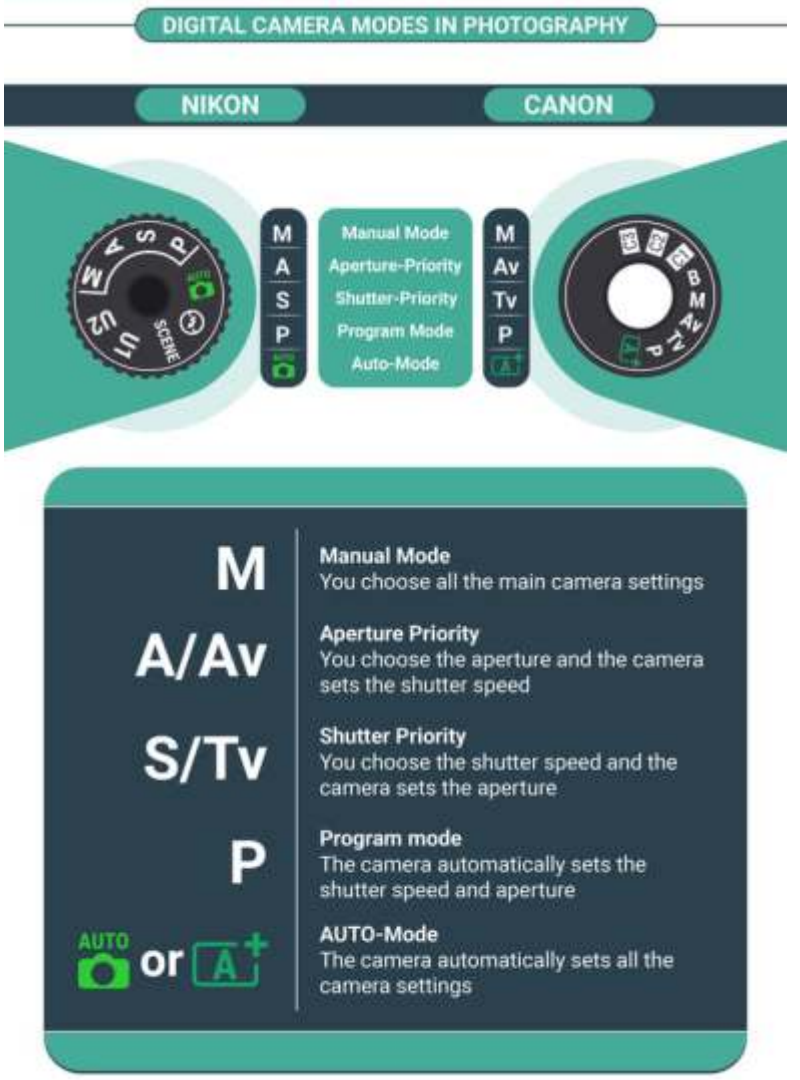

आइये हम इस बार प्रोग्राम ऑटो मोड यानि P Mode को डिसकस करके समझने की कोशिश करते हैं। जब आप कैमरे को P Mode पर सेट करते हैं, तो कैमरा खुद ही शटर स्पीड और अपर्चर चुन लेता है और कैमरे को फोटो क्लिक करने का कमांड देता है।

P Mode में कुछ सेटिंग्स होती है जिन्हें आप मैनुअली एडजस्ट कर सकते हैं।

Comparison Table : P Mode vs Other Modes

Mode	Shutter Speed	Aperture	ISO	Control
Auto	Auto	Auto	Auto	Auto
P Mode	Auto	Auto	Manual/Auto	User + Camera
A/Av Mode	Auto	User set	Manual/Auto	Semi-Manual
S/Tv Mode	User set	Auto	Manual/Auto	Semi-Manual
M Mode	User set	User set	Manual/Auto	Full Manual

- o ISO
- o White Balance
- o Exposure Compensation
- o Flash On/Off
- o Focus Mode और Area selection
- o Metering mode

ISO - प्रोग्राम ऑटो मोड में आपको आईएससो को सेट करने की सुविधा होती है। चाहे तो आप इसको ऑटो पर लगा सकते हैं और चाहे तो आप मैन्युअली सेट करके छोड़ सकते हैं। वैसे डे-लाइट में ऑटो आईएसओ का कोई रोल नहीं हैं। ये सेटिंग वैसे भी मिनिमम पर ही रहती है। आप मैनुअली भी इसको मिनिमम पर लगा के छोड़ सकते हैं।

WHITE BALANCE - प्रोग्राम ऑटो मोड में आप व्हाइट बैलेंस को आटोमेटिक या मैनुअली दोनों ही सेट कर सकते हैं। कलर टेम्परेचर के रिक्वाइर्मेंट के चलते आप इसको अपने हिसाब से कम ज्यादा कर सकते हैं। जैसे कलर की जरूरत हो वैसा ही टेम्परेचर आप सेट कर लीजिये।

EXPOSURE COMPENSATION - प्रोग्राम ऑटो मोड में एक्सपोज़र कंपनसेशन को भी एडजस्ट करने की सुविधा उपलब्ध है।

Flash On/Off - इस मोड में आप अपने फ़्लैश को ऑन /ऑफ कर सकते हैं या फिर एक्सटर्नल फ़्लैश भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

Focus Mode और Area Selection - इसमें आपको अपने फोकस मोड और एरिया सेलेक्शन दोनो को चूज़ करने के ऑप्शन होते हैं।

Metering mode (कैमरा कैसे light measure करता है) - प्रोग्राम ऑटो मोड में आपको मीटरिंग को पढ़ने की भी आजादी होती हैं। कैमरा कैसे अपने एक्सपोज़र को बैलेंस कर रहा है वो आप अपने कमरे के मॉनिटर में देख सकते हैं।

P Mode का use कब करना चाहिए?

- जब आपको सेटिंग्स के बारे में सोचने का ज्यादा वक़्त न हो और आप काम टाइम में ज्यादा शूट करना चाहते हो तब।
- जब आपके सिचुएशन की लाइटनिंग कंडीशन लगातार बदल रही हो।
- जब आप beginner हों लेकिन Auto Mode से थोड़ा आगे बढ़ना चाहते हों।
- जब आप सीखना चाहते हैं कि camera किस logic से exposure चुनता है।

P मोड एक बहुत ही अच्छा मोड है। अगर आप बिगिनर हैं और आप चाहते हैं कि आप मैन्युअल मोड पर शूट करे तो आप P मोड को यूज़ करके उसकी सेटिंग्स को मैन्युअल मोड में कॉपी करके फोटो क्लिक करके ट्राई कर सकते हैं।

तो दोस्तों इस अंक में इतना ही, उम्मीद है आप लोगो को इस बार का आर्टिकल भी पसंद आया होगा, अगले अंक में हम इसी टॉपिक को और डिटेल में समझने की कोशिश करेंगे, अपना बहुत ख्याल रखें। बाए।

कैनन द्वारा उ.प्र. में आयोजित फोटोग्राफी वर्कशाप

लखनऊ 12 जुलाई, प्री-वेडिंग एवं सिनेमैटोग्राफी वर्कशॉप : **मेंटर - अतुल दूबे**

कानपुर 13 जुलाई, ब्राइडल सिनेमैटोग्राफी एवं फोटोग्राफी वर्कशॉप : **मेंटर - अमित सक्सेना**

कौशाम्बी 19 जुलाई, ब्राइडल सिनेमैटोग्राफी एवं फोटोग्राफी वर्कशॉप : **मेंटर - राजेश कामत**

प्रयागराज 20 जुलाई, ब्राइडल सिनेमैटोग्राफी एवं फोटोग्राफी वर्कशॉप : **मेंटर - अतुल दूबे**

अयोध्या 24 जुलाई, मिनी वेडिंग फोटोग्राफी वर्कशॉप : **मेंटर - अमित सक्सेना**

लखनऊ 27 जुलाई, ब्राइडल सिनेमैटोग्राफी वर्कशॉप (केवल मेकअप कलाकारों एवं सैलून के लिए) : **मेंटर - अतुल दूबे**

STUDIO NEWS
लखनऊ, बुधवार, 6 अगस्त 2025 से 5 सितम्बर 2025

"एक छवि का चित्रण सिर्फ कैमरा एक ओर ही नही अपितु दोनों ओर से होता है। - एडवर्ड स्टीकेन

फोटोग्राफर की नजर से यात्रा वृतान्त

अमरनाथ यात्रा - बर्फ के बीच आस्था की आग

रतन शर्मा
फोटोग्राफर

मेरा नाम रतन शर्मा है, उम्र 28 साल। बचपन से ही सुनता आया था, बाबा बर्फानी का बुलावा आता है तो ही कोई वहाँ तक पहुँचता है। और इस साल, शायद मुझे भी बुलावा आ गया था। दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी, जैसे कोई अंदर से आवाज दे रहा हो - "चलो, अब वक्त है।"

मैंने अकेले ही अमरनाथ यात्रा की तैयारी शुरू की। दोस्तों ने कहा, "अभी उम्र नहीं है ऐसी यात्राओं की, तू अभी मस्ती कर, दुनिया घूम!" लेकिन मेरा मन कहीं और था। शरीर से नहीं, दिल से चल पड़ा था मैं। जम्मू से पहलगाम, फिर चढ़ाई शुरू हुई - हर मोड़ पर बर्फ, हर सांस में थकान, और हर पल में बाबा का नाम।

तीसरे दिन एक ऐसा मोड़ आया, जिसने मेरी पूरी यात्रा को एक नया अर्थ दे दिया।

करीब 12 किलोमीटर चढ़ने के बाद, मैं

एक ऐसे मोड़ पर पहुँचा जहाँ ऑक्सीजन की कमी होने लगी। सीने में दर्द होने लगा, साँसें तेज़ हो गईं। लोग आगे बढ़ते गए, लेकिन मैं वहीं ज़मीन पर बैठ गया। मोबाइल नेटवर्क बंद, आसपास कोई जान-पहचान वाला नहीं। रास्ता फिसलन भरा था, लेकिन हर कदम पर कोई न कोई अजनबी हाथ थामने को तैयार मिल जाता। तभी एक साधु बाबा दिखे - लम्बे बाल, सफेद दाढ़ी, और चेहरे पर असीम शांति। उन्होंने मुझसे कुछ नहीं पूछा, बस अपनी झोली से पानी निकाला, मुझे पिलाया और बोले, "डर मत बेटा, बाबा साथ हैं।"

मैंने हिम्मत की, चल पड़ा उनके पीछे-पीछे। धीरे-धीरे साँसें संभलीं, और मैं अमरनाथ गुफा में बर्फ से बनी शिवलिंग को देखकर आँखें नम हो गईं, ऐसा अद्भुत दृश्य, जैसे जीवन का सार सामने खड़ा हो। लेकिन चमत्कार यहीं खत्म नहीं हुआ।

उस दिन मैंने जाना - आस्था कोई कहानी नहीं, वो अनुभव है। अमरनाथ यात्रा ने मेरे जीवन को बदल दिया। जहाँ दुनिया सिर्फ सोशल मीडिया और दिखावे में खोई है, वहाँ कुछ रास्ते ऐसे भी हैं जो आत्मा को ज़िंदा कर देते हैं।

अब जब भी मैं जीवन में थकता हूँ, उस गुफा की शांति, और वो शब्द याद करता हूँ - **"डर मत बेटा, बाबा साथ हैं।"**

उ.प्र. के विभिन्न जिलों में आयोजित फोटोग्राफी वर्कशाप एवं अन्य कार्यक्रम

अयोध्या 16 जुलाई, सोनी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

रायबरेली 17 जुलाई, सोनी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

प्रयागराज 18 जुलाई, सोनी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

गोण्डा 19 जुलाई 2025, निकॉन द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

आजमगढ़ 22 जुलाई 2025, फुजीफिल्म मिनी वर्कशॉप

मऊ 25 जुलाई, सोनी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

फर्रूखाबाद 25 जुलाई 2025, निकॉन द्वारा आयोजित फोटोग्राफी वर्कशॉप

एटा 29 जुलाई, मा. सदर विधायक द्वारा इंडिया फोटो वीडियो एक्सपो के पोस्टर का अनावरण

अयोध्या 30 जुलाई 2025, फुजीफिल्म मिनी वर्कशॉप

STUDIO NEWS
लखनऊ, बुधवार, 6 अगस्त 2025 से 5 सितम्बर 2025

मुझे शब्दों की अपेक्षा चित्र अधिक विश्वसनीय लगते हैं। - गिल्स पेरेज

PHOTO VIDEO ASIA

29 30 31
AUGUST 2025
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI
HALL NO. 8-9-10-11

REGISTRATION SPONSOR
SILVER SPONSOR
SILVER SPONSOR
SILVER SPONSOR
SILVER SPONSOR
BAG SPONSOR

250+ STALLS
30000+ VISITORS
100000+ PRODUCTS
NEW PRODUCTS LAUNCHES
LIVE PRODUCT DEMO
WORKSHOP & SEMINAR

FOR FREE ENTRY GIVE MISS CALL ON
635 739 1003 OR
SCAN QR CODE
ORGANISED BY
AAKAR EXHIBITION
AAKAR EXHIBITION PVT LTD.

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 9335915600, 0522-4108575, ई-मेलः mailtostudionews@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in